डॉ० रामविलास शर्मा

नाटक, निबंध, कविता, कथा-साहित्य, पत्र-पत्रिकाओं आदि सभी के माध्यम से हिन्दी में डॉ० रामविलास शर्मा का युग आधुनिक युग का पर्याय था। डॉ० शर्मा ने इस युग से संबद्ध महत्वपूर्ण साहित्यिकों और व्यक्तित्वों के कार्यों का अपने लेखन के माध्यम से विशद विवेचन किया, उन्होंने विभिन्न व्यक्तियों के कार्यों का विवरण इस प्रकार दिया है, कि व्यक्ति होते हुए भी वे हमारे सामने समाज-व्यक्ति के रूप में आते हैं। और उनके माध्यम से हम तत्कालीन समाज और साहित्य के विविध पक्षों का इतिहास सिर्फ जान ही नहीं देख भी लेते हैं। भारतेन्दु युग में सचमुच हिन्दी की एक युग का दर्शन हो जाता है। डॉ० रामविलास शर्मा की शैली इतनी सारग्राहिणी तथ्यात्मक और सीधी है, कि वह पाठक और वर्ण्य-विषय के मध्य ऐसे घुल-मिल जाती है कि दिखलाई ही नहीं पड़ती। लगता है, कि परिदृश्य घटनाओं और तथ्यों को कोई गद्यकार अपनी दृष्टि से आपके सामने प्रस्तुत कर रहा है

रामविलास शर्मा Ramvilash Sharma

डॉ० रामविलास शर्मा भारतेन्दु युग को राष्ट्र की नवचेतना का युग कहते हैं। 'भारतेन्दु युग' में लेखक ने यह दिखाया है कि हिन्दी में नवीन-चेतना किन व्यक्तियों और संस्थाओं के माध्यम से विकसित हो रही थी, कौन सी परिस्थितियाँ इस चेतना के विकास का कारण थी और विकास के दौरान

परिस्थितियाँ भी किस प्रकार प्रभावित होकर बदल रही थी। साहित्य इस विकास प्रक्रिया को केवल तटस्थ भाव से ही नहीं प्रस्तुत कर रहा था, बल्कि सक्रिय सहयोग कर रहा था। यह भारतेन्दु युग की बहुत बड़ी विशेषता थी। भारतेन्दु और उनके समकालीन अन्य साहित्यकारों का महत्व पंडित रामचन्द्र शुक्ल अपने इतिहास में भलीभाँति स्पष्ट कर चुके थे। डॉ० रामविलास शर्मा ने उन्हीं के काम को आगे बढ़ाया।

डॉ० शर्मा ने प्राचीन समाज और साहित्य का मूल्यांकन करने की मार्क्सवादी प्रवृत्ति की व्याख्या करते हुए लिखा — " यह आवश्यक नहीं कि शोषक वर्ग ने जिन नैतिक अथवा कलात्मक मूल्यों का निर्माण किया है वे सभी शोषण मुक्त वर्ग के लिए अनुपयोगी हों"........ प्राचीन साहित्य के मूल्यांकन में हमें मार्क्सवाद से यह सहायता मिलती है, कि हम इसकी विषय-वस्तु और कलात्मक सौन्दर्य को ऐतिहासिक दृष्टि से देखकर उनका उचित मूल्यांकन कर सकते हैं। डॉ० शर्मा ने विषय-वस्तु और कलात्मक सौन्दर्य को ऐतिहासिक दृष्टि से देखकर 'भारतेन्दु युग' 'निराला' और 'प्रेमचन्द की मूल्यांकन' किया है। उन्होंने इन तीन साहित्यकारों की रचना के मूल्यांकन के माध्यम से हिन्दी साहित्य की प्रगतिशील धारा का (निर्माण) विकास स्पष्ट किया है।

Scanned with Cam

डॉ० शर्मा की इन कृतियों में जहाँ आधुनिक साहित्य के विकास और उसकी लोकवादिता को स्पष्ट किया, वहाँ प्रगतिवादी आलोचना को भी हिन्दी की जातीय परंपरा से जोड़ा। उनकी इन रचनाओं से प्रगतिवादी विचारधारा को हिन्दी जगत को विश्वास प्राप्त हुआ। डॉ० रामविलास शर्मा ने अपनी रचनाओं में 'पत्र और पत्रकार', 'पत्र सा० और प्रगति', 'समासमिति और व्याख्यान' नामक अध्यायों में महत्वपूर्ण सामग्री दी है। समूची सामग्री इतनी अनौपचारिक, सहज और अनाडम्बर भाव से प्रस्तुत की गई कि इस शब्द की जानकारी के लिए किया गया परिश्रम प्रकट नहीं होता। कहने की आवश्यकता नहीं कि यह सरलता, सहजता, परिश्रम, प्रतिभा और ईमानदारी से ही लेखक को प्राप्त होती है। सुखद आश्चर्य होता है, यह देखकर कि डॉ० शर्मा ने गद्य की यह प्रौढ़ एवं अचूक शैली अपने लेखक जीवन के अल्पवय में ही प्राप्त कर ली थी। 'प्रेमचन्द और उनका युग' तथा 'निराला' पुस्तकों का ढाँचा बिल्कुल वही है जो भारतेन्दु युग का। विवेचन शैली भी वही है। समाज और व्यक्ति के विश्लेषणात्मक सूत्रों की संगति उसकी रचना से बिठाई गई है। और फिर रचना का समाज पर प्रभाव दिखाया गया है।

प्रेमचन्द हिन्दी और उर्दू के महान लेखक थे, उन्होंने अपना लेखन उर्दू में शुरु किया, कई उर्दू लेखकों ने यह विचार प्रकट किया था, कि प्रेमचन्द पर 'तिलस्म होशरुबा' 'उमराव जान अदा' आदि का काफी असर है। इसमें कोई संदेह नही, कि प्रेमचन्द ने इन रचनाओं को रस लेकर पढ़ा था। 'तिलस्म होशरुबा' आदि के प्रभाव के विषय में डा०. रामविलास शर्मा ने लिखा है— "इन्हें पढ़ने से उनकी कल्पना शक्ति प्रखर हुई, और खुद को भी लिखने की प्रेरणा मिली। लेकिन प्रेमचन्द ने तिलस्मी होशरुबा का रास्ता नही अपनाया। उनकी रचनाएं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट और राधा कृष्ण दास के कथा साहित्य का अगला और स्वाभाविक कदम थी। डॉ० रामविलास शर्मा उन आलोचकों में से हैं, जो रचना को रचनाकार से काटकर देखने में विश्वास नही करते। यदि यह सत्य है, कि रचनाकार अपने अनुभूत सत्य को साहित्य में चित्रित करता है तो उसका साहित्य समझने के लिए जरुरी है कि हम उस जीवन पृष्ठभूमि को भी देखें, जिसमें साहित्यकार का भौतिक संसार रचा था। सच्चे साहित्यकार का व्यक्तित्व और कृतित्व आदर्शों के अनुकूल दिशा में चलता है। डॉ० शर्मा ने भारतेन्दु एवं उनके सहयोगी साहित्यकारों प्रेमचन्द, निराला, इत्यादि पर लिखते

समय उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के संगत मुद्दों को जोड़ा है। ये सारे जो महान साहित्यकार और महान व्यक्ति भी थे। उनके जीवन और रचना-दृष्टि में असंगति नहीं थी।

डॉ० रामविलास शर्मा ने प्रेमचन्द के प्रमुख उपन्यासों पर अलग-अलग और कहानियों पर एक ही अध्याय पर विचार किया है। प्रेमचन्द के महत्व और लोकप्रियता बहुत लोगों का ध्यान गया, और लोगों ने बहुत कुछ लिखा है, तथा तरह-तरह की उक्तियां भी दी हैं, लेकिन इस तरह के प्रमाण देना जनवादी आलोचक डॉ० रामविलास शर्मा का ही काम था। — "चन्द्रकांता और तिलस्म होशरुबा के पढ़ने वाले लाखों थे, पर प्रेमचन्द ने इन लाखों पाठकों को 'सेवासदन' का पाठक बनाया। यह उनका युगांतकारी काम था। सेवासदन पर विचार करते हुए डॉ० शर्मा ने यह मत व्यक्त किया है, कि इस उपन्यास की मूल समस्या 'भारतीय नारी की पराधीनता' है। सुमन, रतन तथा अन्य पात्रों के चित्रण से प्रेमचन्द इसी समस्या को रेखांकित किया है, दहेज, वेश्यावृत्ति, आभूषण प्रियता यह सब नारी पराधीनता के ही विभिन्न पहलू हैं। इसी के साथ प्रेमचन्द ने समाज के प्रतिष्ठित लोगों का पर्दाफाश किया है।"
डॉ० रामविलास शर्मा सामाजिक यथार्थ के चित्रण और तथाकथित उदय की की झूठी महत्ता का पर्दाफाश करनेवालों में प्रेमचन्द का स्थान

बहुत ऊँचे रखते हैं। और लिखते हैं "कबीर के बाद किसी ने इतनी सच्चाई से ऐसे मर्म वेदी व्यंग्य से हिन्दु धर्म और इस्लाम दोनों धर्मों के ढोंगियों और पाखण्डियों का पर्दाफाश न किया था।"

डॉ० राम विलास शर्मा हिन्दी के प्रमुख मार्क्सवादी आलोचकों में भी अपना नाम दर्ज कराते हैं। इनकी दृष्टि सबसे अधिक पैनी स्वच्छ और विश्लेषणात्मक है, वे साहित्यकार के लिए यह आवश्यक मानते हैं कि उसे वर्ग भेद पर आधारित समाज की पहचान हो, वैचारिक स्तर पर डॉ० रामविलास शर्मा कहीं भी समझौता वादी नहीं हैं। वे कहते हैं - "पार्टी - जन साहित्यकार बनकर हम ऐसे साहित्य का निर्माण कर सकेंगे, जो अगली पीढ़ियों के लिए मूल्यवान है। डॉ० शर्मा जी की आलोचना कृतियों में प्रमुख है - प्रगति और परंपरा, प्रगतिशील साहित्य की समस्याएं, 'आस्था और सौन्दर्य', आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी और हिन्दी नवजागरण,' निराला की साहित्य-साधना 1-2-3 भाषा और समाज, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, इसमें उन्होंने शुक्ल जी की लोकहृदय में लीन होने की कसौटी पर बल दिया है। और उनके अन्तर्विरोधों को भी उजागर किया है। रामविलास जी अपनी प्रारंभिक आलोचना ग्रन्थों में जो आक्रोश, साहस एवं अवसरवादिता दिखाई है, वह परवर्ती काल में

लिखे गए ग्रन्थों में नहीं दिखाई पड़ती। इनमें संयम है, संतुलन है, और विवेक है।
अपने दृष्टिकोण भाषा के प्रति को स्पष्ट करते हुए वे लिखते हैं – " भाषा एक हथियार है, जिससे हम प्रतिगामी की शक्ति पर प्रहार कर सकते हैं, क्रांति के लिए आवश्यक है, अपनी शत्रु-रूपी प्रतिगामी रूपों को पहचानना। समाज परिवर्तन में भाषा की महत्वपूर्ण भूमिका को मार्क्स ने पहचाना था। हिन्दी में निराला जी ने भी भाषा के बंधन को तोड़ा, और प्रगतिशीलता की ओर अग्रसर हुए। तुलसीदास के बारे में भी वे सामंतविरोधी मूल्यों की खोज करते हुए इस महाकवि को शोषितों के साथ जुड़ा हुआ बतलाते हैं। डॉ० रामविलास शर्मा हिन्दी के इन आलोचकों में हैं, जो मार्क्सवादी चिंतन के प्रकाश स्तम्भ हैं। इनकी आलोचना में यत्र-तत्र आक्रामक मुद्रा है। क्योंकि जो उनके विचारों के प्रतिकूल है उस पर निर्मम प्रहार करने पर वे चूकते नहीं। उन्होंने अपनी समीक्षात्मक कृतियों द्वारा प्रगतिशील एवं प्रतिक्रिया-वादी तत्वों को पहचानने की भी दृष्टि प्रदान की, वह हिन्दी साहित्य को उनके द्वारा दिया गया सबसे बड़ा योगदान है।

The end